



हफ्तावार रिसाला : 201
Weekly Booklet : 201

Gharelu Jhagdon Ka Ilaj (Hindi)

अमीरे अहले सुन्नत عليه السلام की किताब

“फैजाने सुन्नत” की एक किस्त

घरेलू झगड़ों का इलाज

सफ़हात 20

- मिल कर खाने में मे'दे का इलाज 02
- घरेलू झगड़ों का इलाज 12
- दुआ मांगने के 17 मदनी फूल 16



शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हजरते अल्लामा मौलाना अबू विलाल

मुहम्मद इब्न्यास अत्तार क़ादिरि रज़वी دامت برکاتهم
العالیه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये ان شاء الله تعالی जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاذْخِرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले ।

(مُسْتَنْزَف ج ٤٠ ص ٤٠٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ
व मग़िफ़रत



13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

घरेलू झगड़ों का इलाज

येह रिसाला (घरेलू झगड़ों का इलाज)

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ط
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

येह मज़मून “फैज़ाने सुन्नत” के सफ़हा 198 ता 220 से लिया गया है।

घरेलू झगड़ों का इलाज

दुआए अत्तार : या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 19 सफ़हात का रिसाला :
 “घरेलू झगड़ों का इलाज” पढ़ या सुन ले, उस के घर बार और रोज़गार
 में बरकतें अता फ़रमा कर उसे अपनी राह में खर्च करने की तोफ़ीक़ अता
 फ़रमा।

أَمِينُ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : क़ियामत के रोज़ अल्लाह
 पाक के अर्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन शख्स अल्लाह पाक के अर्श के
 साए में होंगे। अर्ज की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ वोह कौन लोग
 होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : (1) वोह शख्स जो मेरे उम्मती की परेशानी दूर करे (2)
 मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करने वाला (3) मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला।

(الهدور السافرة في امور الاخرة، ص 131، حديث: 366)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

मिल कर खाने में बरकत है

मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'जम
 रिवायत करते हैं कि सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने
 बरकत निशान है, कि इकट्ठे हो कर खाओ अलग अलग न खाओ कि बरकत
 जमाअत के साथ है।

(ابن ماجه، 4/21، حديث: 3287)

सैर होने का नुस्खा

हज़रते वहशी बिन हर्ब رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ अपने दादाजान رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ से रिवायत करते हैं कि सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की, “या रसूलल्लाह! صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हम खाना तो खाते हैं मगर सैर नहीं होते?” सरकारे दो आलम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया, “तुम अलग अलग खाते होगे?” अर्ज़ की, “जी हां,” फ़रमाया, “मिल बैठ कर खाना खाया करो और बिस्मिल्लाह पढ़ लिया करो तुम्हारे लिये खाने में बरकत दी जाएगी।”

(ابوداؤد، 3/486، حديث: 3764)

मिल कर खाने की फ़ज़ीलत

एक ही दस्तर ख़्वान पर मिल कर खाने वालों को मुबारक हो कि हज़रते अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ से रिवायत है कि अल्लाह पाक को यह बात सब से ज़ियादा पसन्द है कि वोह बन्दए मोमिन को बीवी बच्चों के साथ दस्तर ख़्वान पर बैठ कर खाता देखे। क्यूं कि जब सब दस्तर ख़्वान पर जम्अ होते हैं तो अल्लाह पाक उन को रहमत की निगाह से देखता है और जुदा होने से पहले पहले उन सब को बरख़्शा देता है।

(تعمية الغافلین، ص 343)

मिल कर खाने में मे'दे का इलाज

पेथोलोजी के एक प्रोफ़ेसर ने इन्किशाफ़ किया है जब मिल कर खाना खाया जाता है तो सब खाने वालों के जरासीम खाने में मिल जाते हैं और वोह दूसरे अमराज़ के जरासीम को मार डालते हैं नीज़ बा'ज़ अवकात खाने में शिफ़ा के जरासीम शामिल हो जाते हैं जो मे'दे के अमराज़ के लिये मुफ़ीद होते हैं।

एक का खाना दो को काफी है

हज़रते जाबिर رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नबिय्ये करीम, صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को फ़रमाते सुना, “एक का खाना दो को काफी है और दो का खाना चार को और चार का खाना आठ को किफ़ायत करता है।” (5368:877, مسلم، ص)

प्यारे प्यारे आका मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने किफ़ायत निशान है, दो का खाना तीन को और तीन का खाना चार को काफी है।

(بخاری، 526/3، حدیث: 5392)

कनाअत की ता'लीम

मशहूर मुफ़स्सिर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान رَضِيَ اللهُ عَلَيْهِ इस हदीसे मुबारक के तहत फ़रमाते हैं, “अगर खाना थोड़ा हो और खाने वाले ज़ियादा, तो उन्हें चाहिये कि दो आदमियों के खाने पर तीन आदमी और तीन के खाने पर चार आदमी गुज़ारा कर लें अगर्चे पेट तो न भरेगा मगर इतना खा लेने से जो'फ़ भी न होगा (या'नी कमज़ोरी भी न होगी), इबादात ब ख़ूबी अदा हो सकेंगी। इस फ़रमाने अलीशान में कनाअत व मुरव्वत की आ'ला ता'लीम है।”

(मिरआतुल मनाजीह, 6/16)

तनख़्वाह कम करवा दी

ख़लीफ़तुरसूल हज़रते सिद्दीके अकबर رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के दौरे ख़िलाफ़त का वाकिआ है। एक बार हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللهُ عَنْهُ की जौजाए मोहतरमा (Wife) رَضِيَ اللهُ عَنْهَا को हल्ला खाने की ख़्वाहिश हुई तो आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया हमारे पास इतनी रक़म नहीं कि हम हल्ला ख़रीद सकें अर्ज़ की मैं अपने घरेलू अख़राजात में से चन्द दिनों में थोड़े थोड़े पैसे बचा कर कुछ रक़म जम्अ कर लूंगी उसी से हल्ला ख़रीद लेंगे।” फ़रमाया : “ऐसा कर लेना”।

चुनान्चे, आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ की जौजए मोहतरमा رَضِيَ اللهُ عَنْهَا ने रक़म जम्अ करना शुरू की। चन्द दिनों में थोड़ी सी रक़म जम्अ हो गई। जब उन्होंने ने आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ को बताया ताकि आप हल्वा ख़रीद लें तो आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने वोह रक़म ली और बैतुल माल में लौटा दी और फ़रमाया कि येह हमारे अख़्जाजत से जाइद है। इस के बा'द आप रَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने आयिन्दा के लिये बैतुल माल से मिलने वाले वज़ीफ़े में इतनी रक़म कम करवा दी। (الكاف في التاريخ، 2/271)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत को सुन कर फ़क़त ना'रए दादो तहसीन बुलन्द कर के दिल को खुश कर लेने के बजाए हमें भी तक्वा और क़नाअत का दर्स हासिल करना चाहिये। बिल खुसूस अरबाबे इक्तदार व हुकूमती अफ़सरान नीज़ अइम्मए मसाजिद, दीनी मदारिस के मुदर्रिसीन और मुख़ालिफ़ इस्लामी शो'बाजात से वाबस्ता इस्लामी भाइयों के लिये इस हिकायत में क़नाअत व खुददारी अपनाने, हिर्स व तमअ से खुद को बचाने और अपनी आख़िरत को बेहतर बनाने के लिये ख़ूब ख़ूब ख़ूब सामाने इब्रत है। काश ! हम सब महज़ नफ़्स की तहरीक पर तनख़्वाह की कमी बेशी या'नी “उस की तनख़्वाह तो इतनी ज़ियादा और मेरी इतनी कम” कह कह कर इस तरह के मुआमलात में उलझने के बजाए क़लील आमदनी पर क़नाअत करते हुए नेकियों में कसरत के तमन्नाई बन जाएं। सिद्दीके अक्बर رَضِيَ اللهُ عَنْهُ की परहेज़गारी और दौलते दुन्यवी से बे रग़बती के मुतअल्लिक़ एक और हिकायत मुलाहज़ा फ़रमाइये चुनान्चे,

वक़फ़ की चीज़ों के बारे में एहतियात

इमामे अ़ली मक़ाम, हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन मुज्ताबा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं, ख़लीफ़तुरसूल हज़रते सिद्दीके अक्बर रَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने अपनी वफ़ात

के वक्त उम्मुल मुअमिनीन हज़रते बीबी आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ عَنْهَا से फ़रमाया, देखो ! यह ऊंटनी जिस का हम दूध पीते हैं और यह बड़ा पियाला जिस में खाते पीते हैं और यह चादर जो मैं ओढ़े हुए हूँ, यह सब बैतुल माल से लिया गया है। हम इन से उसी वक्त तक नफ़अ अन्दोज़ हो सकते थे जब तक मैं मुसलमानों के उमूरे ख़िलाफ़त अन्जाम दिया करता था। जिस वक्त मैं वफ़ात पा जाऊँ तो यह तमाम सामान हज़रते उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ عَنْهُ को दे देना। चुनान्चे जब हज़रते सिद्दीके अकबर رَضِيَ اللهُ عَنْهُ का इन्तिक़ाल हो गया तो उम्मुल मुअमिनीन हज़रते आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ عَنْهَا ने यह तमाम चीज़ें ह़स्बे वसिय्यत वापस कर दीं। हज़रते उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने (चीज़ें वापस पा कर) फ़रमाया कि अल्लाह पाक उन पर रहूम फ़रमाए कि उन्होंने ने तो अपने बा'द में आने वालों को थका दिया है। (तारिख़ الخلفاء، ص 60)

खाने वाले की मग़ि़रत की एक सूत

जो भी साहिबे शान काम शुरू किया जाए उस से क़ब्ल बिस्मिल्लाह शरीफ़ ज़रूर पढ़नी चाहिये कि सुन्नत है। इसी तरह खाने या पीने से क़ब्ल भी बिस्मिल्लाह पढ़ना सुन्नत है और इस की बड़ी बरकतें हैं। चुनान्चे हज़रते अनस رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से रिवायत है कि मक्की मदनी सरकार, दो अ़ालम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया, “आदमी के सामने खाना रखा जाता है और उठाने से पहले ही उस की मग़ि़रत हो जाती है, इस की सूत यह है कि जब रखा जाए बिस्मिल्लाह कहे और जब उठाया जाने लगे, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ कहे।” (जाय़ صغير، ص 122، حديث: 1974)

टेबल कुर्सी पर खाना सुन्नत नहीं

बुख़ारी शरीफ़ में हज़रते अनस رَضِيَ اللهُ عَنْهُ रिवायत फ़रमाते है, अल्लाह

पाक के आखिरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ख़्वान (या'नी मेज़) पर खाना खाया न ही छोटी छोटी पियालियों में खाया और न आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के लिये पतली चपातियां पकाई गईं। हज़रते क़तादा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से जब पूछा गया, वोह हज़रात किस चीज़ पर खाते थे ? फ़रमाया, दस्तर ख़्वान पर। (بخاری، 532/3، حدیث: 5415)

सदरुशरीअह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ف़रमाते हैं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! टेबल कुर्सी पर खाना अगर्चे गुनाह नहीं मगर सुन्नत भी नहीं। हज़रते मुफ़ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ बहारे शरीअत हिस्सा 16 में फ़रमाते हैं, “ख़्वान, तिपाई (या मेज़) की तरह ऊंची चीज़ होती है जिस पर उमरा (या'नी अमीर लोगों) के यहां खाना चुना जाता है। ताकि खाते वक़्त झुकना न पड़े उस पर खाना खाना मुतकब्बिरीन का तरीका था जिस तरह बा'ज लोग इस ज़माने में मेज़ (Table) पर खाते हैं, छोटी छोटी पियालियों में खाना उमरा का तरीका है उन के यहां मुख़लिफ़ किस्म के खाने छोटे छोटे बरतनों में रखे जाते हैं।” (बहारे शरीअत, 5/369 हिस्सा : 16)

कौन सा दस्तर ख़्वान सुन्नत है ?

मशहूर मुफ़स्सिर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं, “सुन्नत यह है कि खाने के आगे क़दरे झुक कर बैठे। दस्तर ख़्वान कपड़े का, चमड़े का और खजूर के पत्तों का होता था इन तीन किस्म के दस्तर ख़्वानों पर खाना हुजूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने खाया है, दस्तर ख़्वान भी नीचे ज़मीन पर बिछता था और खुद सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ भी ज़मीन पर तशरीफ़ फ़रमा होते थे।” (मिरआतुल मनाजीह, 6/13)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! टेबल कुर्सी पर खाना अगर्चे गुनाह नहीं मगर ज़मीन पर दस्तर ख़्वान बिछा कर खाना सुन्नत है और सुन्नत ही में

अज़मत है। अफ़सोस ! आजकल येह सुन्नत मुसलमानों ने काफ़ी हद तक तर्क कर रखी है, मज़हबी घरानों में भी अब टेबल कुर्सी पर खाने का रवाज हो गया है। शादियों में भी टेबल कुर्सी बल्कि अब तो कुर्सी भी हटा ली गई है लोग टेबल के इर्द गिर्द फिर कर खाना खाते हैं। आह ! सुन्नतों भरा दौर फिर कब आएगा !

सुन्नतें आ़म करें दीन का हम काम करें नेक हो जाएं मुसलमान मदीने वाले

हर लुक़्मे पर अल्लाह का ज़िक्र

हज़रते अनस رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से मरवी है, “अल्लाह पाक उस बन्दे से राज़ी होता है कि जब लुक़्मा खाता है तो उस पर अल्लाह पाक की हम्द करता है और पानी पीता है तो इस पर उस की हम्द करता है।”

(مسلم، ص 1122، حدیث: 6932)

हर लुक़्मे पर पढ़ने का तरीक़ा

سُبْحَانَ اللهِ ! रिज़ाए इलाही पाने का कितना आसान नुस्खा है। खुदा की क़सम ! अल्लाह पाक की रिज़ा से बढ़ कर कोई सआदत ही नहीं। जिस से वोह राज़ी होगा उसी को अपना दीदार बख़्शेगा, उसी को जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िल फ़रमाएगा। हर लुक़्मा खाने और हर घूंट पीने पर अल्लाह पाक का नाम लेने और लुक़्मा खा लेने और घूंट पी लेने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ कहने की आदत बनाने की कोशिश कीजिये। ताकि खाने पीने का वक़्त भी ग़फ़लत में न गुज़रे। हो सके तो हर दो लुक़्मे के दरमियान اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ और يا وَاٰجِدُ और बिस्मिल्लाह कहने की आदत बनाइये कि यूं हर लुक़्मे की इब्तिदा बिस्मिल्लाह और اِنْ شَاءَ اللهُ के ज़िक्र पर और हर लुक़्मे का इख़िताम हम्द पर होगा। मक्तबतुल मदीना नेकियों का अम्बार और सवाब के अन्वार ही अन्वार होंगे।

के जेबी साइज़ के रिसाले 40 रूहानी इलाज के स. 11 पर है, يَا وَاجِدُ जो कोई खाना खाते वक़्त हर निवाले पर पढ़ेगा إِنَّ شَاءَ اللَّهُ الْكَرِيمِ वोह खाना उस के पेट में नूर होगा और मरज़ दूर होगा।⁽¹⁾

कर उल्फ़त में अपनी फ़ना या इलाही अत्ता कर दे अपनी रिज़ा या इलाही

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सुन्ते सीखने, सिखाने के लिये आशिक़ाने रसूल के साथ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करते रहिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ अमली तौर पर खाने की सुन्नतों भरी तरबियत होती रहेगी और إِنَّ شَاءَ اللَّهُ कभी तो ऐसा खाना मिल जाएगा कि आप के वारे न्यारे हो जाएंगे चुनान्चे इस्लामी भाइयों के साथ पेश आने वाला वाक़िआ अपने अन्दाज़ में पेश करने की कोशिश करता हूँ।

दाता साहिब رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की तरफ़ से मदनी क़ाफ़िले की खैर ख़्वाही

हमारा मदनी क़ाफ़िला दाता दरबार की मस्जिद के अन्दर तीन दिन के लिये क़ियाम पज़ीर था। हम मदनी क़ाफ़िले के जद्दवल के मुताबिक़ सुन्नतों की तरबियत हासिल कर रहे थे, दौराने हल्का एक साहिब तशरीफ़ लाए उन्होंने ने आशिक़ाने रसूल के साथ बड़ी महबूबत के साथ मुलाक़ात की फिर कहने लगे, الْحَمْدُ لِلَّهِ आज रात मेरी क़िस्मत का सितारा चमका और हुज़ूर दाता गन्ज बख़्शा अली हिज्वेरी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ मुझ गुनहगार के ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और कुछ इस तरह फ़रमाया, “दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले वाले आशिक़ाने रसूल तीन दिन के लिये मेरी मस्जिद में ठहरे हुए हैं लिहाज़ा तुम उन के

①..... येह सिर्फ़ 18 सफ़हात का रहमतों और बरकतों भरा रिसाला मक्तबतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन त़लब फ़रमाइये। (मजलिसे मक्तबतुल मदीना)

खाने का इन्तिज़ाम करो।” लिहाज़ा मैं मदनी काफ़िले वालों की ख़ैर ख़्वाही के लिये खाना लाया हूँ आप हज़रात क़बूल फ़रमाइये।

क्या गरज़ दर दर फिरूँ मैं भीक लेने के लिये है सलामत आस्ताना आप का दाता पिया झोलियां भर भर के ले जाते हैं मंगते रात दिन हो मेरी उम्मीद का गुलशन हरा दाता पिया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

साहिबे मज़ार ने मदद फ़रमाई

سُبْحَانَ اللَّهِ ! औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ मज़ारत में रहते हुए भी अपने मेहमानों की खातिर मदारात फ़रमाते हैं चुनान्चे हुज्जतुल इस्लाम हज़रते इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ कुछ इस तरह नक्ल करते हैं, मक्कए मुकर्रमा के एक शाफ़ेई मुजावर का कहना है, मिस्र में एक ग़रीब शख्स के यहां बच्चे की विलादत हुई, उस ने एक समाजी कारकुन से राबिता किया, वोह नौ मौलूद के वालिद को ले कर कई लोगों से मिला मगर किसी ने माली इमदाद न की, आख़िर कार एक मज़ार पर हाज़िरी दी, उस समाजी कारकुन ने कुछ इस तरह फ़रियाद की, “या सय्यिदी ! अल्लाह पाक आप पर रहूम फ़रमाए, आप अपनी ज़ाहिरी ज़िन्दगी में बहुत कुछ दिया करते थे, आज कई लोगों से नौ मौलूद के लिये मांगा मगर किसी ने कुछ न दिया।” येह कहने के बा’द उस समाजी कारकुन ने ज़ाती तौर पर आधा दीनार नौ मौलूद के वालिद को उधार पेश करते हुए कहा, “जब कभी आप के पास पैसों की तरकीब बन जाए मुझे लौटा देना।” दोनों अपने अपने रास्ते हो लिये। समाजी कारकुन को रात ख़्वाब में साहिबे मज़ार का दीदार हुवा, फ़रमाया, आप ने मुझ से जो कहा वोह मैं ने सुन लिया था मगर उस वक़्त जवाब देने की इजाज़त न थी, मेरे घर वालों से जा कर कहिये कि वोह अंगीठी के नीचे की जगह खोदें, एक मशकीज़ा

निकलेगा उस में 500 दीनार होंगे वोह सारी रक़म उस नौ मौलूद के वालिद को पेश कर दीजिये ।” चुनान्चे वोह साहिबे मज़ार के घर वालों के पास पहुंचा और सारा माजरा कह सुनाया । उन लोगों ने निशान देही के मुताबिक़ जगह खोदी और 500 दीनार निकाल कर हाज़िर कर दिये । समाजी कारकुन ने कहा, येह सब दीनार आप ही के हैं, मेरे ख़्वाब का क्या ए'तिबार ! वोह बोले, जब हमारे बुजुर्ग दुन्या से पर्दा फ़रमाने के बा'द भी सखावत करते हैं तो हम क्यूं पीछे हटें ! चुनान्चे उन लोगों ने ब इसरार वोह दीनार उस समाजी कारकुन को दिये और उस ने जा कर उस नौ मौलूद के वालिद को पेश कर दिये और सारा वाकिआ सुनाया । उस ग़रीब शख़्स ने आधे दीनार से कर्ज़ा उतारा और आधा दीनार अपने पास रखते हुए कहा, “मुझे येही काफ़ी है ।” बाकी सब उसी समाजी कारकुन को देते हुए कहा, बकिर्या तमाम दीनार ग़रीब व नादार लोगों में तक्सीम फ़रमा दीजिये । रावी का बयान है, मुझे समझ नहीं आती कि इन सब में कौन ज़ियादा सखी है !

(احياء علوم الدين 3/309)

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो ।

ख़ाली कभी फेरा ही नहीं अपने गदा को ऐ साइलो मांगो तो ज़रा हाथ बड़ा कर खुद अपने भिकारी की भरा करते हैं झोली खुद कहते हैं या रब ! मेरे मंगता का भला कर

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

औलिया बा'दे वफ़ात भी नफ़अ पहुंचाते हैं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! पहले के लोग बुजुर्गों के बारे में किस क़दर अच्छा अक़ीदा रखते थे और ब वक़्ते ज़रूरत उन से अपनी हाजतें तलब करते थे । उन का येह ज़ेहन बना हुवा होता था कि अल्लाह वाले ब अ़ताए

इलाही मदद किया करते हैं। बहर हाल औलियाउल्लाह رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ अपने रब्बे का एनात की इनायात से मज़ारात में हयात होते हैं, आने जाने वालों की बात सुनते हैं, हिदायत व इस्तिआनत करते हैं और अपने घरों के मुआमलात की भी ख़बर रखते हैं, ज़भी तो साहिबे मज़ार बुजुर्ग رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने ख़्वाब में जा कर उस समाजी कारकुन की रहनुमाई फ़रमाई और उस नौ मौलूद के ग़रीब बाप की दस्त गीरी और माली इमदाद की। हज़रते अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी फ़रमाते हैं, “औलियाउल्लाह رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ रब्बे का एनात की बारगाह में मुख़लिफ़ दरजात रखते हैं और ज़ाइरीन को अपने मआरिफ़ व असरार के लिहाज़ से नफ़अ पहुंचाते हैं।” (روايات، 3/178)

हम को सारे औलिया से प्यार है إِنَّ شَاءَ اللَّهُ अपना बेड़ा पार है

कौन सा खाना बीमारी है

हज़रते उक्बा बिन अमिर رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ से रिवायत है, अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अरबी صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने सिद्दहत निशान है, “जिस खाने पर अल्लाह पाक का नाम न लिया गया हो वोह बीमारी है और उस में बरकत नहीं है और इस का कफ़ारा येह है कि अगर अभी दस्तर ख़्वान न उठाया गया हो तो बिस्मिल्लाह पढ़ कर कुछ खा ले और दस्तर ख़्वान उठा लिया गया हो तो बिस्मिल्लाह पढ़ कर उंग्लियां चाट ले।”

(جامع صغير، ص 394، حديث: 6327)

शैतान के लिये खाना हलाल

हज़रते हुज़ैफ़ा رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ रिवायत करते हैं कि ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमान है, “जिस खाने पर बिस्मिल्लाह न पढ़ी जाए वोह खाना शैतान के लिये हलाल हो जाता है।” (या'नी बिस्मिल्लाह न पढ़ने की सूरत में शैतान उस खाने में शरीक हो जाता है)

(مسلم، ص 860، حديث: 9259)

खाने को शैतान से बचाओ

खाने से पहले बिस्मिल्लाह न पढ़ने से खाने में बे बरकती होती है। हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं, “हम ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमते वा बरकत में हाज़िर थे। खाना पेश किया गया, इब्तिदा में इतनी बरकत हम ने किसी खाने में नहीं पाई, मगर आखिर में बड़ी बे बरकती देखी। हम ने अर्ज़ की, “**या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ!** ऐसा क्यूं हुवा?” इर्शाद फ़रमाया, “हम सब ने खाना खाते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ी थी। फिर एक शख़्स बिगैर बिस्मिल्लाह पढ़े खाने को बैठ गया, उस के साथ शैतान ने खाना खा लिया।” (شرح السنّة، 6/62، حدیث: 2818)

शैतान से हिफ़ाज़त

हज़रते सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ रिवायत करते हैं, रहमते आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया, “जिसे येह बात पसन्द हो कि शैतान उस के पास से न तो खाना पाए और न कैलूला करने पाए और न ही रात गुज़ार सके तो उसे चाहिये कि जब घर में दाख़िल हो तो सलाम कर ले और खाने के लिये बिस्मिल्लाह पढ़ ले।” (مَجْمَعُ الزَّوَادِ، 8/77، حدیث: 12773)

घरेलू झगड़ों का इलाज

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَضِيَ اللهُ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं, “घर में दाख़िल होते वक़्त بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढ़ कर पहले सीधा क़दम दरवाज़े में दाख़िल करना चाहिये फिर घर वालों को सलाम करते हुए घर के अन्दर आएँ। अगर घर में कोई न हो तो كَلِمَةُ السَّلَامِ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ कहे। बा'ज बुजुर्गों को देखा गया है कि दिन की इब्तिदा में घर में दाख़िल होते वक़्त بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ और शरीफ़ पढ़ लेते हैं कि इस से घर में इत्तिफ़ाक़ भी रहता है (या'नी झगड़ा नहीं होता) और रोज़ी में बरकत भी।” (میر آتول مناجیہ، 6/9)

बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाए तो क्या करे

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते बीबी आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “जब कोई शख्स खाना खाए तो अल्लाह पाक का नाम ले। या’नी बिस्मिल्लाह पढ़े और अगर शुरूअ में बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाए तो यूँ कहे, “اِ بِسْمِ اللّٰهِ اَوْلٰئِهٖ وَاٰخِرِهٖ”

(الإوداء، 3/487، حديث: 3767)

शैतान ने खाना उगल दिया

हज़रते उमय्या बिन मख़ज़ी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं, एक शख्स बिगैर बिस्मिल्लाह पढ़े खाना खा रहा था, जब खा चुका, सिर्फ़ एक ही लुक़्मा बाकी रह गया, वोह लुक़्मा उठाया और उस ने येह कहा, اِ بِسْمِ اللّٰهِ اَوْلٰئِهٖ وَاٰخِرِهٖ। ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुस्कराने लगे और येह इर्शाद फ़रमाया : “शैतान इस के साथ खाना खा रहा था जब इस ने अल्लाह पाक का नाम ज़िक्र किया तो जो कुछ उस के पेट में था उगल दिया।”

(الإوداء، 3/488، حديث: 3768)

निगाहे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से कुछ पोशीदा नहीं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब भी खाना खाएं याद कर के بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ लेना चाहिये। जो नहीं पढ़ता उस का “क़रीन” नामी शैतान भी खाने में साथ शरीक हो जाता है। हज़रते उमय्या बिन मख़ज़ी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ वाली रिवायत से साफ़ ज़ाहिर हो रहा है कि हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की निगाहें सब कुछ देख लिया करती थीं जभी तो शैतान को बद हवासी के अ़ालम में कै करता हुवा मुलाहज़ा फ़रमा कर मुस्करा दिये। चुनान्चे

हकीमुल उम्मत मुफ़ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं, “रहमते अ़ालम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मुक़द्दस नज़रें हकीकत में छुपी हुई मख़्लूक को भी मुलाहज़ा फ़रमाती हैं, और हदीसे मुबारक बिल्कुल अपने ज़ाहिरी मा’ना पर है

किसी तावील की ज़रूरत नहीं, जैसे हमारा पेट मख्खी वाला खाना (जब कि मख्खी उस में मौजूद हो) क़बूल नहीं करता। ऐसे ही शैतान का मे'दा बिस्मिल्लाह वाला खाना हज़म नहीं कर पाता। अगर्चे उस का कै किया हुवा खाना हमारे काम नहीं आता और भूका भी रह जाता है और हमारे खाने की फ़ौत शुदा बरकत लौट आती है। गरजे कि इस में हमारा फ़ाएदा है और शैतान के दो नुक़सान, और मुम्किन है कि वोह मरदूद आयिन्दा हमारे साथ बिगैर बिस्मिल्लाह वाला खाना भी इस डर से न खाए कि शायद येह बीच में बिस्मिल्लाह पढ़ ले और मुझे कै करनी पड़ जाए। हृदीसे पाक में जिस आदमी का जि़क़्र है ग़ालिबन वोह अकेला खा रहा था अगर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ खाता होता तो बिस्मिल्लाह न भूलता क्यूं कि वहां तो हाज़िरीन बिस्मिल्लाह बुलन्द आवाज़ से कहते थे और साथ वालों को बिस्मिल्लाह कहने का हुक्म करते थे।”

(मिरआतुल मनाज़ीह, 2/30)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! الْحَمْدُ لِلَّهِ दा'वते इस्लामी के दीनी माह्ले और बिल खुसूस मदनी क़ाफ़िलों में ख़ूब दुआएं पढ़ने और सीखने का मौक़अ मिलता है, दा'वते इस्लामी की बहारों के तो क्या कहने ! एक इस्लामी भाई की मदनी बहार अपने अन्दाज़ में पेश करने की सअ़दत हासिल करता हूं।

मां चारपाई से उठ खड़ी हुई

उन इस्लामी भाई की अम्मीजान सख़्त बीमारी के सबब चारपाई से उठने तक से मा'ज़ूर हो गई थीं और डॉक्टरों ने भी जवाब दे दिया था। उस इस्लामी भाई ने सुना था कि अशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतें सीखने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने से दुआएं क़बूल होतीं और बीमारियां दूर हो जाती हैं। चुनान्चे उन्हीं ने भी दिल बांधा और दा'वते इस्लामी के नूर बरसाते मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में “दारुस्सुन्नह”

हाज़िर हो कर तीन दिन के लिये **मदनी काफ़िले** में सफ़र का इरादा जाहिर किया, इस्लामी भाइयों ने निहायत शफ़क़त के साथ हाथों हाथ लिया, आशिक़ाने रसूल के साथ उन का **मदनी काफ़िला** एक गोठ में पहुंचा, दौराने सफ़र **आशिक़ाने रसूल** की ख़िदमात उन्होंने ने दुआ की दर ख़्वास्त करते हुए अपनी अम्मीजान की तश्वीशनाक हालत बयान की, इस्लामी भाईयों ने उन की अम्मीजान के लिये ख़ूब दुआएं करते हुए उन्हें काफ़ी दिलासा दिया, अमीरे काफ़िला ने बड़ी नरमी के साथ **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हें मज़ीद एक माह के **मदनी काफ़िले** में सफ़र के लिये आमदा किया, उन्होंने ने निय्यत भी कर ली। उन्होंने ने अम्मीजान की सिह्हत याबी के लिये ख़ूब गिड़गिड़ा कर दुआएं कीं, तीन दिन के इस मदनी काफ़िले की तीसरी रात उन्हें एक रोशन चेहरे वाले बुजुर्ग की ज़ियारत हुई, उन्होंने ने फ़रमाया, “अपनी अम्मीजान की फ़िक्र मत करो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** वोह सिह्हत याब हो जाएंगी।” तीन दिन के **मदनी काफ़िले** से फ़ारिग़ हो कर उन्होंने ने घर आ कर दरवाज़े पर दस्तक दी, दरवाज़ा खुला तो वोह हैरत से खड़े के खड़े रह गए, क्यूं कि उन की वोह बीमार अम्मीजान जो कि चारपाई से उठ तक नहीं सकती थीं उन्होंने ने अपने पाउं पर चल कर दरवाज़ा खोला था ! उन्होंने ने फ़र्ते मसरत से मां के क़दम चूमे और मदनी काफ़िले में देखा हुवा ख़्वाब सुनाया। फिर मां से इजाज़त ले कर मज़ीद एक माह के लिये **आशिक़ाने रसूल** के साथ **मदनी काफ़िले** में सफ़र पर रवाना हो गए।

मां जो बीमार हो क़र्ज़ का बार हो रन्जो ग़म मत करें काफ़िले में चलो
रब के दर पर झुकें इल्लिजाएं करें बाबे रहमत खुलें काफ़िले में चलो
दिल की कालक धुले मरजे इस्यां टले आओ सब चल पड़ें काफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कर के दुआ करने की बरकत से इस्लामी भाई की मां शिफ़ाय़ाब हो गई । दुआ फिर दुआ होती है ।

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते मौलाए काएनात, अलिय्युल मुर्तज़ा शरे खुदा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ रिवायत करते हैं कि मक्की मदनी सरकार, दो आलम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया :

الدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ، وَوَعِمَادُ الدِّينِ، وَنُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ (مسندنا لعلي، 1/215، حديث: 435)
या'नी "दुआ मोमिन का हथियार है और दीन का सुतून है और ज़मीनो आस्मान का नूर है ।" आइये ज़िम्नन दुआ के मदनी फूलों से अपने दिलों के मदनी गुलदस्तों को महकाते हैं ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

“दुआ मोमिन क्व हथियार है” के सतरह हुरूफ़ की निस्बत से दुआ मांगने के 17 मदनी फूल

(तक़रीबन तमाम मदनी फूल अहूसनुल विआअ लि आदाबिहुआ मअ शर्हे ज़ैलुल मुहआ लि अहूसनिल विआअ मत्वूआ मक्तबतुल मदीना से हैं)

﴿1﴾ हर रोज़ कम अज़ कम बीस बार दुआ करना वाजिब है । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ नमाज़ियों का येह वाजिब, नमाज़ में सूरतुल फ़ातेहा से अदा हो जाता है कि اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۝ (तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हम को सीधा रास्ता चला) भी दुआ और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ (तरजमए कन्ज़ुल ईमान : सब खूबियां अल्लाह को जो मालिक सारे जहान वालों का) कहना भी दुआ है । ﴿2﴾ दुआ में हद से न बढ़े । मसलन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का मर्तबा मांगना या आस्मान पर चढ़ने की तमन्ना करना । नीज़ दोनों जहां की सारी भलाइयां और सब की

सब खूबियां मांगना भी मन्अ है कि इन खूबियों में मरातिबे अम्बिया عليهم السلام भी हैं जो नहीं मिल सकते। ﴿3﴾ जो मुहाल (या'नी ना मुम्किन) या क़रीब ब मुहाल हो उस की दुआ न मांगे। लिहाज़ा हमेशा के लिये तन्दुरुस्ती अफ़ियत मांगना कि आदमी उम्र भर कभी किसी तरह की तकलीफ़ में न पड़े येह मुहाले आदी की दुआ मांगना है। यूंही लम्बे क़द के आदमी का छोटा क़द होने या छोटी आंख वाले का बड़ी आंख की दुआ करना मन्अ है कि येह ऐसे अम्र की दुआ है जिस पर क़लम जारी हो चुका है। ﴿4﴾ गुनाह की दुआ न करे कि मुझे पराया माल मिल जाए कि गुनाह की त़लब करना भी गुनाह है। ﴿5﴾ क़त्ए रेहूम (मसलन फुलां रिशतेदारों में लड़ाई हो जाए) की दुआ न करे। ﴿6﴾ अल्लाह पाक से सिर्फ़ हक़ीर चीज़ न मांगे कि परवर्द गार ग़नी है बल्कि अपनी तमाम तवज्जोह उसी की त़रफ़ रखे और हर चीज़ का उसी से सुवाल करे। ﴿7﴾ रन्जो मुसीबत से घबरा कर अपने मरने की दुआ न करे। ख़याल रहे कि दुन्यवी नुक्सान से बचने के लिये मौत की तमन्ना ना जाइज़ है और दीनी मज़रत (या'नी दीनी नुक्सान) के ख़ौफ़ से जाइज़। ﴿8﴾ बिला ज़रूरते शर्इ किसी के मरने और ख़राबी (बरबादी) की दुआ न करे, अलबत्ता अगर किसी काफ़िर के ईमान न लाने पर यक़ीन या ज़न्ने ग़ालिब हो और (उस के) जीने से दीन का नुक्सान हो या किसी ज़ालिम से तौबा और जुल्म छोड़ने की उम्मीद न हो और उस का मरना, तबाह होना मख़्लूक के हक़ में मुफ़ीद हो तो ऐसे शख़्स पर बद दुआ करना दुरुस्त है। ﴿9﴾ किसी मुसलमान को येह बद दुआ न दे कि “तू काफ़िर हो जाए” कि बा'ज़ इलमा के नज़दीक (ऐसी दुआ मांगना) कुफ़्र है और तहक़ीक़ येह है कि अगर कुफ़्र को अच्छा या इस्लाम को बुरा जान कर कहे तो बेशक कुफ़्र है वरना बड़ा गुनाह है कि मुसलमान की बद ख़्वाही (या'नी बुरा चाहना) हराम है,

खुसूसन येह बद् ख़्वाही (कि फुलां का ईमान बरबाद हो जाए) तो सब बद् ख़्वाहियों से बद्तर है। ﴿10﴾ किसी मुसल्मान पर ला'नत न करे और उसे मरदूद व मल्लुन न कहे और जिस काफ़िर का कुफ़्र पर मरना यकीनी नहीं उस पर भी नाम ले कर ला'नत न करे। यूँही मच्छर और हवा और जमादात (या'नी बेजान चीज़ों मसलन पथ्थर, लोहा वगैरा) व हैवानात पर ला'नत मम्मूअ है। अलबत्ता बिच्छू वगैरा बा'ज़ जानवरों पर हदीसे पाक में ला'नत आई है। ﴿11﴾ किसी मुसल्मान को येह बद् दुआ न दे कि “तुझ पर खुदा का ग़ज़ब नाज़िल हो और तू (भाड़ और) आग या दोज़ख़ में दाख़िल हो।” कि हदीस शरीफ़ में इस की मुमानअत वारिद है। ﴿12﴾ जो काफ़िर मरा उस के लिये दुआए मग़िफ़रत हराम व कुफ़्र है। ﴿13﴾ येह दुआ करना, “खुदाया ! सब मुसल्मानों के सब गुनाह बख़्शा दे।” जाइज़ नहीं कि इस में उन अहदीसे मुबारका की तकज़ीब (या'नी झुटलाना) होती है जिन में बा'ज़ मुसल्मान का दोज़ख़ में जाना वारिद हुवा। अलबत्ता यूँ दुआ करना “सारी उम्मेते मुहम्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मग़िफ़रत (या'नी बख़्शाश) हो या सारे मुसल्मानों की मग़िफ़रत हो” जाइज़ है। ﴿14﴾ अपने लिये और अपने दोस्त अहबाब, अहलो माल और औलाद के लिये बद् दुआ न करे, क्या मा'लूम कि क़बूलिय्यत का वक़्त हो और बद् दुआ का असर ज़ाहिर होने पर नदामत हो। ﴿15﴾ जो चीज़ हासिल हो (या'नी अपने पास मौजूद हो) उस की दुआ न करे मसलन मर्द यूँ न कहे, “या अल्लाह मुझे मर्द कर दे” कि इस्तिहज़ा (मज़ाक़ बनाना) है। अलबत्ता ऐसी दुआ जिस में शरीअत के हुक्म की ता'मील या अज़िज़ी व बन्दगी का इज़हार या परवर्दगार और मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से महब्बत या दीन या अहले दीन की तरफ़ रग़बत या कुफ़्रो काफ़िरीन से नफ़रत वगैरा के

फ़वाइद निकलते हों वोह जाइज है अगर्चे इस अम्र का हुसूल यकीनी हो । जैसे दुरूद शरीफ़ पढ़ना, वसीले की, सिराते मुस्तकीम की अल्लाह पाक और रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दुश्मनों पर ग़ज़ब व ला'नत की दुआ करना । ﴿16﴾ दुआ में तंगी न करे मसलन यूँ न मांगे या अल्लाह तन्हा मुझ पर रहूम फ़रमा या सिर्फ़ मुझे और मेरे फुलां फुलां दोस्त को ने'मत बख़्श । बेहतर येह है कि सब मुसल्मानों को दुआ में शामिल कर ले इस का एक फ़ाएदा येह भी होगा कि अगर खुद उस नेक बात का हक़दार न भी हुवा तो अच्छे मुसल्मानों के तुफ़ैल पा लेगा । ﴿17﴾ हुज्जतुल इस्लाम हज़रते इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ग़ज़ाली फ़रमाते हैं, मज़बूत अक़ीदे के साथ दुआ मांगे और क़बूलिय्यत का यकीन रखे ।

(احياء العلوم/4/770)

फ़ेहरिस

मिल कर खाने में बरकत है.....1	औलिया बा'दे वफ़ात भी
मिल कर खाने में मे'दे का इलाज.....2	नफ़अ पहुंचाते हैं.....10
क़नाअत की ता'लीम3	कौन सा खाना बीमारी है.....11
तनख़्वाह कम करवा दी.....3	खाने को शैतान से बचाओ.....12
वक्फ़ की चीज़ों के बारे में एह्तियात.....4	शैतान से हिफ़ज़त.....12
टेबल कुर्सी पर खाना सुन्नत नहीं.....5	घरेलू झगड़ों का इलाज.....12
कौन सा दस्तर ख़ान सुन्नत है ?.....6	बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाए तो क्या करे..13
हर लुक़्मे पर अल्लाह का ज़िक्र.....7	शैतान ने खाना उगल दिया.....13
दाता साहिब की तरफ़ से	निगाहे मुस्तफ़़ि़र से कुछ पोशीदा नहीं.....13
मदनी काफ़िले की ख़ैर ख़्वाही.....8	मां चारपाई से उठ खड़ी हुई.....14
साहिबे मज़ार ने मदद फ़रमाई.....9	दुआ मांगने के 17 मदनी फूल.....16

أَحْمَدُ لِلْمَرْبِ الْعَلِيمِ وَالصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ * أَنَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّيْمِ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ * بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ *

मुआफ़ करने की फज़ीलत

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ है : क़ियामत के रोज़ ए'लान किया जाएगा जिस का अज़्र अल्लाह पाक के ज़िम्मए करम पर है, वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए । पूछा जाएगा : किस के लिये अज़्र है ? वोह ए'लान करने वाला कहेगा : उन लोगों के लिये जो मुआफ़ करने वाले हैं । तो हज़ारों आदमी खड़े होंगे और बिला हिसाब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे ।

(तहम औसदा، 542/1، محدیث: 1998 مختصراً)



978-969-722-189-9



01082200



فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی

+92 21 111 25 26 92 0313-1139278

www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net

feedback@maktabatulmadinah.com / ilmla@dawateislami.net